Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

छायावादी काव्य दृष्टि और निराला का काव्य संसार

डॉ0 बालेश्वर प्रसाद
सहा0प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग, अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अतर्रा, बाँदा, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 3 Issue 3
Page Number : 164-168
Publication Issue :
May-June-2020
Article History
Accepted : 20 June 2020
Published : 30 June 2020

शोधसारांश- निराला की संवेदनाओं का क्षितिज बहुत व्यापक और प्रशस्त है। उनका काव्य समग्र जीवन को अपनी परिधि में समेटने वाला जीवन की समग्रता का काव्य है। उसमें जीवन का सम्पूर्ण संगीत, संवादी–विवादी सारे स्वरों के साथ गुंजायमान है। उसमें जीवनशतधा अपनी सम्पूर्ण छवियों के साथ, राग–विरागमयी अपनी पूरी भंगिमाओं को लिए हुए विद्यमान है। नौ रसों के पृथक–पृथक वैशिष्टय को सहेजे हुए वह उनकी समष्टि भी है।

मुख्य शब्द- छायावादी, काव्य, दृष्टि, निराला, संसार, समष्टि, रीतिकालीन।

पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश–विदेश की सुंदरी के वाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिन्दी में इसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। रीतिकालीन प्रचलित परम्परा से जिसमें वाह्य वर्णन की प्रधानता थी इस ढंग की कविताओं में भिन्न प्रकार से भावों की नये ढंग से अभिव्यक्ति हुई। ये नवीन भाव आन्तरिक स्पर्श से पुलकित थे। अभ्यांतर सूक्ष्म भावों की प्रेरणा वाह्य स्थूल आकार में भी कुछ विचित्रता उत्पन्न करती है। हिन्दी में नवीन शब्दों की भंगिमा स्पृहणीय आभ्यांतर वर्णन के लिए प्रयुक्त होने लगी। शब्द विन्यास में ऐसा पानी चढ़ा कि उसमें एक तड़प उत्पन्न करके सूक्ष्म अभिव्यक्ति का प्रयास किया गया।
भवभूति के अनुसार–

व्यतिषजति पदार्थानांतरः कोपि हेतुः
नखलु बहि रूपाधीन प्रीयतः संश्रयंते।

वाह्य उपाधि से हटकर अंतर हेतु की ओर कवि कर्म प्रेरित हुआ। ध्वनिकार ने इसी पर कहा है–

"प्रतीय मानं पुनरूपदेव वस्त्वस्ति वाणीषुमहाकवीनाम्।"

अभिव्यक्ति का यह निराला ढंग अपना स्वतंत्र लावण्य रखता है।
इसके लिए कहा गया है–

मुक्ताफतेषुच्छायायास्तरलत्वमिवांतरा
प्रतिभाति यदंगेषु तल्लावण्यमिहोच्यते।।

मोती के भीतर छाया जैसी तरलता होती है वैसे ही कांति की तरलता अंग में लावण्य कही जाती है। इस लावण्य को संस्कृत साहित्य में छाया और विच्छित्ति के द्वारा निरूपित किया गया था। प्रकृति विश्वात्मा की छाया या प्रतिबिंब है। 'छाया' भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकमा, लाक्षणिकता, सौन्दर्य मय प्रतीक विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृत्ति छायावाद की प्रमुख विशेषता है– अपने भीतर

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

से मोती के पानी की तरह अंतर स्पर्श करके भाव समर्पण करने वाली अभिव्यक्ति है छायावाद। आचार्य शुक्ल इसे दो अर्थों में अभिव्यक्ति देते-

(अ) जहाँ उसका सम्बन्ध काव्य वस्तु से होता है अर्थात् जहाँ कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। इस रूपात्मक आभास को यूरोप में छाया (फैंटसमासा) कहते थे। ब्रह्म समाज के आध्यात्मिक गीतों को भी 'छायावाद' कहते थे। रवीन्द्र बाबू की धूम मचने पर हिन्दी के साहित्य क्षेत्र में भी यह प्रकट हुई।

(आ) छायावाद शब्द का दूसरा अर्थ काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है। .....छायावाद का अर्थ हुआ प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करने वाली छाया के रूप में अप्रस्तुत कथन।"[1]

छायावाद बड़ी सहृदयता के साथ प्रभाव साम्य पर ही विशेष लक्ष्य रख कर चला है।

डॉ0 नामवर सिंह जी के अनुसार- "छायावाद विशेष रूप से हिन्दी साहित्य के 'रोमांटिक' उत्थान की वह काव्यधारा है, जो इस्वी सन् 1918 से 1936 तक की प्रमुख युगवाणी रही, जिसमें प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी प्रभृति मुख्य कवि हुए और सामान्य रूप से भावोच्छवास प्रेरित स्वच्छंद कल्पना-वैभव की वह 'स्वच्छंद-प्रवृत्ति है जो देश-काल गत वैशिष्ट्य के साथ संसार की सभी जातियों के विभिन्न उत्थानशील युगों की आशा-आकांक्षा में निरन्तर व्यक्त होती रही है। स्वच्छन्दता की उसी सामान्य भाव धारा की विशेष अभिव्यक्ति का नाम हिन्दी साहित्य में 'छायावाद' पडा।"[2]

मुकुटधर पाण्डेय ने 'श्री शारदा' पत्रिका में 'हिन्दी में छायावाद' लेख माला प्रकाशित करायी थी। 'सरस्वती' में छायावाद का प्रथम उल्लेख 1921 में मिलता है। ये सभी लेख व्यंग्यात्मक थे। इसमें छायावाद को "टैगोर स्कूल की चित्रकला के समान अस्पष्ट", कोटे कागद की भाँति अस्पष्ट", "निस्तब्धता का उच्छ्वास", "निर्मल ब्रह्म की विशद छाया", "वाणी की नीरवता", "अनंत का विलास" आदि कहा गया। छायावाद के लिए 'मिस्टिसिज्म' शब्द के आते ही 'रहस्यवाद' शब्द की नींव पड़ गयी। आचार्य द्विवेदी ने इसे 'अन्योक्ति पद्धति' का नाम देते हुए कहा - "छायावाद का लोगों से क्या मतलब है, कुछ समझ में नहीं आता। शायद उनका मतलब है कि किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े तो उसे छायावादी कविता कहना चाहिए।"[3]

इस प्रकार छायावाद व्यक्तिवाद की कविता है। व्यक्तिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में इन आधुनिक कवियों ने जो निर्भीकता और साहस दिखलाया है वह पहले किसी कवि में नहीं मिलता आधुनिक 'लिरिक' या 'प्रगीत' इसी वैयक्तिकता के प्रतीक है। इन कवियों ने जीवन की संकुलता तथा अतिशय सामाजिकता को तीव्रता के साथ अनुभव किया। उन्हें लगा कि "The world in too much with us"।[4]

प्रसाद का 'आँसू' भी मूलत: इसी प्रकार का मानवीय प्रेम-काव्य है। छायावाद की इस प्रणय-सम्बन्धी वैयक्तिकता का प्रसार क्रमश: जीवन के अन्य क्षेत्र में भी हुआ। निराला का 'विप्लवी बादल' इसी वैयक्तिक विद्रोह का अग्रदूत है। 'सरोज स्मृति' और 'वन-वेला' में यही वैयक्तिक विद्रोह और भी खुल कर व्यक्त हुआ है। "मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिकता छाया का मान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।"[5] डॉ0 नगेन्द्र ने इसे "स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह" कहा है।

छायावाद जितना अद्भुत और आव्हादक है उससे भी अधिक मनोरम, दिव्य और विराट् चेतना की कविता है निराला का काव्य-जगत। छायावाद के पुरोधा निराला ने हमेशा अपने वैशिष्ट्य का परिचय दिया है। 'लीक से हटकर' चलना महापुरुषों का औदात्य है। युग पुरुष निराला न केवल क्रान्तिकारी कवि थे अपितु आत्माहंता आस्था के कवि भी। छायावाद चतुष्ट्य का क्रम कोई भी हो निराला सबसे पृथक है। अनामिका, परिमल, गीतिका, अणिमा, तुलसीदास, बेला, अर्चना, आराधना गीत-गुंज, नये पत्ते में से कोई एक भी अमरता का प्रतीक हो सकता है। गाँव-गँवइ की मिट्टी से जुड़े आम आदमी

की पीड़ा से पीड़ित इस लोक कल्याणकारी चेतना सम्बन्धित युग कवि की वाणी में ओज और उदात्ता का मणि कांचन योग है। निराला छायावाद के मूर्धन्य कवि है, जो निजपरक शैली का जयघोष करते हुए कहते हैं–

"मैंने मैं शैली अपनाई।"

निराला के व्यक्तित्व और काव्य के निर्माण में ऐसे परमाणुओं का सन्निवेश हुआ है जिनका विश्लेषण हिन्दी की वर्तमान धारणा भूमि में विशेष क्लिष्ट प्रतीत होता। निराला के विकास के मूल में भावना की अपेक्षा बुद्धितत्व की प्रमुखता है। यह या तो उनके दार्शनिक विषद् अध्ययन का परिणाम है या उनके मानसिक संगठन का नैसर्गिक स्वरूप। "निराला की कविताओं में बौद्धिकता उत्कर्ष अपनी पराकाष्ठा तक पहुँचा हुआ मिलता है।"[6]

निराला ने हिन्दी कविता को नवीन भूमि प्रदान की। वे आधुनिक हिन्दी कविता के आदि गुरू है। नये काव्य के पुरोधा के साथ उन्होंने आलोचना के क्षेत्र में भी अपनी यथेष्ट गति प्रमाणित की। छायावाद के काव्य के मूल में आध्यात्मिक दर्शन है। काव्य और दर्शन दो अलग अन्वितियाँ हैं। कला के मूल सत्य मानव मन के सौंदर्य और रसात्मकता के प्रति निराला की सहमति है। कला को एक उत्कृष्ट विभूति मानते हुए निराला कहते हैं – "कला वह है जिसमें मनुष्य के मन का चित्र दिखलाया गया है।"[7]

निराला ने कवि को संस्कृति का अग्रदूत और भावनाओं का गायक कहा है उसमें एक उत्तेजना होती है जो मनुष्य में सद्भाव का जागरण करती है। उसके शब्द सोते हुए को जगाते हैं। वह अपने भाव उसमें भरकर उन्हें जागृति की प्रेरणा देता है। वह जागरण का मन्त्र फूँकता है और आनन्द के स्वर का गान ही उसका कर्त्तव्य होता है। आनन्द प्राप्त और प्रदान करने की यह कवि–वृत्त भारतीय काव्यशास्त्र की वह चिरपरिचित शाश्वत और स्थायी व्याख्या है जो काव्य को ब्रह्मानन्द सहोदर मानती है। कवि के स्वर के पीछे निराला प्रतिभा की पुकार को ही महत्त्व देते हैं; जो देव–शक्ति की अभ्युत्थान ध्वनि है और इसी के आविर्भाव से कवि का हृदय उद्भाषित होता है। काव्य का सृजन होता है कवि की उत्तेजना आत्मा की वह ध्वनि है, जो 'स्व' में 'पर' का प्रतिबिम्ब अवलोकित करती है। यह भी सीमातीत है।

"श्री राघव हुए प्रणत मन्द-स्वर-वन्दन कर।
होगी जय-होगी जय हे! पुरुषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।"[8]

'कविर्मनीषी परिभु: स्वयंभू' से सहमत होकर वे कवि को ब्रह्म ही प्रमाणित करते हैं। कविता में एक प्रकार का दैवी शक्ति का उल्लेख करते हैं और भारतीय कविता का विशेष आग्रह 'रस पुष्टि' के प्रति मानते हैं; जिसके कविता में प्राण संचार की शक्ति आती है। निराला कहते हैं–

"काव्य में यदि कोई कवि अपने व्यक्तित्व पर खास तौर से जोर देता है तो इसे उसका अक्षम्य अहंकार न समझ, मेरे विचार से उसकी विशाल व्याप्ति का साधन समझना निरूपद्रव होगा। कारण अहंकार को घटा कर मिटा देना जिस तरह पूर्ण व्याप्ति है, जैसा भक्त कवियों ने किया उसी तरह बढ़ाकर भूमा में परिणत कर देना भी पूर्ण व्याप्ति है– जैसा ज्ञानियों ने किया।"[9]

भक्तों और ज्ञानियों का उल्लेख सोदेश्य, आध्यात्मिक और आत्मिक है। व्यक्तित्व के इसी आख्यान के अनुरूप निराला ने लिखा है–

"मैंने मैं शैली अपनाई
देखा एक निजी दुख भाई
दु:ख की छाया पड़ी हृदय में

झर उमड़ वेदना आई।"

'परिमल' की प्रार्थना में वे कविता को कोमल–पद गामनी कहते है और उससे नूतन–जीवन–भरने तथा जग को ज्योतिर्मय करने की प्रार्थना करते है। जब निराला तुम चलो बुलाया है उसने जल्दी तुम को उस पार कहते तो उनका निर्देश कविता के लोकोत्तरानन्द को ध्वनित करना ही है। 'निश्छल और अविकार'कविता का वास प्रकृति के मुक्त सौन्दर्य में पृथ्वी से आकाश तक फैला है। 'गीतिका' में वे 'कलुष–भेदों में तम–निवारण और प्रकाश से भरने तथा अज्ञान के बन्धनों को काटकर ज्योतिर्मय ज्ञान का निर्झर बहाने की बात कहते है।

"कविता मानस की कुसुमित वाणी है। यह कल्पना–कानन की रानी है।"[10]

निराला की संवेदनाओं का क्षितिज बहुत व्यापक और प्रशस्त है। उनका काव्य समग्र जीवन को अपनी परिधि में समेटने वाला जीवन की समग्रता का काव्य है। उसमें जीवन का सम्पूर्ण संगीत, संवादी–विवादी सारे स्वरों के साथ गुंजायमान है। उसमें जीवनशतधा अपनी सम्पूर्ण छवियों के साथ, राग–विरागमयी अपनी पूरी भंगिमाओं को लिए हुए विद्यमान है। नौ रसों के पृथक–पृथक वैशिष्टय को सहेजे हुए वह उनकी समष्टि भी है। निराला का साहित्य संसार, भूख लाचारी, गरीबी, विवशता, मेधा की अपूर्वता, भावों की विलक्षणता, जनमानस की उदास मानसिकता, समर्पित राष्ट्र–बोध और एक स्वर्गीय लोक कल्याणकारी भावों को सहेजे हुए हैं। इस कवि कि कविता को समझने के लिए निराला को भी समझना आवश्यक होगा। जो कहते हैं–

"मैं भी होता
यदि राजपुत्र-मैं क्यों न सदा कलंक ढोता
ये होते-जितने विद्याधर-मेरे अनुचर
मेरे प्रसाद के लिए विनत-सिर उद्यत-कर
मैं देता कुछ, रख अधिक, किन्तु जितने पेपर
सम्मिलित कण्ठ से गाते मेरी कीर्ति अमर।"

इस संघर्ष मय जीवन में 'वन बेला' में जिस उज्ज्वल–पथ के दर्शन होते वही इस महाकवि को प्रेरणा लोक और यश–पथ है–

"बोला मैं - यही सत्य, सुन्दर!
नाचती वृत्त पर तुम ऊपर
होता जब उपल-प्रहार प्रखर!
अपनी कविता
तुम रहो एक मेरे उर में
अपनी छवि में शुचि संचरिता।"[11]

अपनी संस्कृति में निरन्तर संवाद निराला की काव्य शक्ति का अपूर्व सम्बल है। भारतीय साहित्य में आधुनिकता के प्रतीक हे निराला। इतिहास और संस्कृति के बहुआयामी धरातल पर निराला के कृतित्व से सम्पर्क एक जीवन्त, अविस्मरणीय और उत्तेजना अनुभव है। तभी तो 'निराला के प्रति' शमशेर बहादुर सिंह को कहना पडा–

"भूल कर जब राह - जब जब राह- भटका मैं
तुम्हीं झलके, हे महाकवि
सघन तम की 'आँख बन मेरे' लिए।"

सन्दर्भ सूची-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ0 362
2. छायावाद, आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, डॉ0 नामवर सिंह, पृ0 11
3. छायावाद, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, सरस्वती, पृ0 7
4. वड्र्सवर्थ
5. छायावाद, आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी।
6. कवि निराला, आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी, पृ0 21
7. रवीन्द्र कविता कानन, निराला, पृ0 88
8. राम की शक्ति पूजा, निराला।
9. प्रबन्ध–पद्य, निराला, पृ0 50
1. 10.अनामिका, पृ0 42
2. 11.वनबेला, निराला